I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

ज्ञानप्रकाश विवेक के उपन्यास 'डरी हुई लड़की' में मानवीय संवेदना का विश्लेषण

बिन्दर कुमारी[1]*, डॉ मुकेश कुमार[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, विजय सिंह पथिक राजकीय (पी ० जी ०) महाविद्यालय, कैराना (शामली)
[2] सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, विजय सिंह पथिक राजकीय (पी ० जी ०) महाविद्यालय, कैराना (शामली)

Corresponding Author: * बिन्दर कुमारी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.23008248

सारांश

ज्ञानप्रकाश विवेक हिंदी कथा-साहित्य के उन गिने-चुने रचनाकारों में से हैं जो मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक यथार्थ और स्त्री-विमर्श को अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरते हैं। उनका उपन्यास 'डरी हुई लड़की' समाज की क्रूरता और उसके बरक्स खड़ी मानवीय करुणा तथा प्रेम का एक सजीव दस्तावेज है। यह शोध-पत्र उपन्यास की मुख्य पात्र नन्दिनी (जो बलात्कार जैसी अमानवीय त्रासदी का शिकार है) और नायक राजन के मध्य पनपते खामोश प्रेम, सहानुभूति और जीवन जीने की अदम्य जिजीविषा के माध्यम से मानवीय संवेदना के विविध आयामों का विश्लेषण करता है। यह पत्र यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि कैसे यह उपन्यास स्त्री-पीड़ा को समझने के लिए एक नई और सकारात्मक दृष्टि प्रदान करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 07-01-2026
- **Accepted:** 27-01-2026
- **Published:** 28-02-2026
- **IJCRM:**5(1); 2026: 310-313
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमारी बि, कुमार मु . ज्ञानप्रकाश विवेक के उपन्यास 'डरी हुई लड़की' में मानवीय संवेदना का विश्लेषण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(1):310-313.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: मानवीय संवेदना, स्त्री-विमर्श, जिजीविषा, मानसिक आघात, सहानुभूति, ज्ञानप्रकाश विवेक, खामोश प्रेम।

© 2026 बिन्दर कुमारी, डॉ मुकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में मानवीय संवेदना और सामाजिक यथार्थ का चित्रण हमेशा से एक केंद्रीय विषय रहा है। साहित्य का मूल उद्देश्य ही मनुष्य को मनुष्य के दुख-दर्द से जोड़ना और समाज की विद्रूपताओं के बीच करुणा को बचाए रखना है। आज के समय में, जब समाज में यांत्रिकता, अलगाव और अमानवीय घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, तब साहित्य ही वह सशक्त माध्यम बचता है जो हमारे भीतर की मृतप्राय हो रही सहानुभूति को पुनर्जीवित करता है। विशेषकर स्त्री-विमर्श और हाशिए के समाज पर लिखे गए साहित्य ने इन संवेदनाओं को गहराई से टटोला है। इसी समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में ज्ञानप्रकाश विवेक एक ऐसे खामोश, गंभीर और संजीदा रचनाकार के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराते हैं, जिनका लेखन नारों और सतही विमर्शों से दूर, सीधे मनुष्य के अंतर्मन और उसकी आत्मा से संवाद करता है।

हरियाणा के बहादुरगढ़ में जन्मे ज्ञानप्रकाश विवेक के साहित्य में अंचल की माटी की गंध, आम आदमी का संघर्ष और रिश्तों की बारीक परतें पूरी प्रामाणिकता के साथ मौजूद हैं। कहानी, गजल और उपन्यास—इन सभी विधाओं में समान अधिकार रखने वाले विवेक जी की लेखनी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बाहरी घटनाओं से कहीं अधिक उस घटना के मनोवैज्ञानिक प्रभाव और पात्रों की भीतरी उथल-पुथल पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ जैसी प्रतिष्ठित संस्था द्वारा प्रकाशित उनका बहुचर्चित उपन्यास 'डरी हुई लड़की' उनकी इसी रचनात्मक और संवेदनात्मक गहराई का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। जैसा कि शीर्षक से ही ध्वनित होता है, यह उपन्यास एक खौफजदा और गहरे मानसिक आघात (Trauma) से गुज़र रही स्त्री की कहानी है। यह स्त्री समाज की सबसे वीभत्स और क्रूर घटना—बलात्कार—का शिकार हुई है। प्रायः हमारे समाज का यह कड़वा यथार्थ है कि ऐसी घटनाओं के बाद वह पीड़िता के प्रति संवेदनशील होने के बजाय, जाने-अनजाने उसी को कठघरे में खड़ा कर देता है। इस सामाजिक क्रूरता के कारण पीड़िता का एकाकीपन और भय और भी गहरा हो जाता है।[1]

किंतु ज्ञानप्रकाश विवेक का यह उपन्यास केवल एक स्त्री की पीड़ा, समाज की संवेदनहीनता या त्रासदी का रुदन मात्र नहीं है। इसके विपरीत, यह उस त्रासदी के बाद उपजे एकांत, भय और अवसाद के बीच 'मानवीय करुणा' के अंकुरित होने की अत्यंत मार्मिक कथा है। यह शोध-पत्र इसी बिंदु को केंद्र में रखता है कि कैसे लेखक ने इस उपन्यास में क्रूरता के बरक्स एक अत्यंत कोमल और मानवीय लोक का सृजन किया है।

उपन्यास का नायक राजन रूढ़िवादी और पितृसत्तात्मक पुरुष-छवि से एकदम भिन्न है। वह नन्दिनी (नायिका) की देह के पार उसकी आत्मा के घावों को देखता है और अपनी निश्छल सहानुभूति, परवाह तथा खामोश प्रेम से उसे उस मानसिक यंत्रणा से बाहर निकालने का प्रयास करता है। यह शोध-पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि 'डरी हुई लड़की' केवल पारंपरिक स्त्री-विमर्श का एक और खाका नहीं खींचता, बल्कि यह पुरुष की उस सकारात्मक, मानवीय और सहयोगी भूमिका को भी पुरजोर तरीके से रेखांकित करता है, जो एक टूटी हुई स्त्री को उसका खोया हुआ आत्मसम्मान और जीवन जीने की अदम्य जिजीविषा लौटा सकती है।

अतः 'डरी हुई लड़की' में मानवीय संवेदनाओं का अध्ययन मात्र एक साहित्यिक विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह एक गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विमर्श की मांग करता है, जो यह स्थापित करता है कि भयानक से भयानक मानवीय त्रासदियों का उपचार केवल सच्ची मानवीय करुणा और प्रेम में ही निहित है।

2. उपन्यास की मूल कथावस्तु

'डरी हुई लड़की' की कथावस्तु महज़ एक घटना का आख्यान नहीं है, बल्कि यह एक गहरी मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक यात्रा है। उपन्यास का ताना-बाना मुख्य रूप से दो प्रमुख पात्रों—नन्दिनी और राजन—के इर्द-गिर्द बुना गया है। नन्दिनी एक ऐसी युवा स्त्री है जो हमारे समाज की सबसे अमानवीय, वीभत्स और क्रूर घटना (बलात्कार) का शिकार हुई है।[2] यह त्रासदी केवल उसके शरीर को ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा और उसके समूचे अस्तित्व को छलनी कर देती है। इस भयावह घटना के परिणामस्वरूप नन्दिनी गहरे मानसिक आघात और अवसाद में चली जाती है। वह भीतर से पूरी तरह टूट चुकी है; उसका समाज, पुरुषों और यहाँ तक कि स्वयं से भी विश्वास उठ चुका है। वह बाहरी दुनिया से पूरी तरह कट जाती है और एक अनाम खौफ के साये में जीने को विवश है—यही कारण है कि वह एक 'डरी हुई लड़की' बन जाती है।

इस घने अंधकार और ठहराव के बीच उपन्यास में राजन का प्रवेश होता है। राजन समकालीन समाज के उस ठेठ, आक्रामक और असंवेदनशील पुरुष की छवि से एकदम उलट है। वह एक अत्यंत संवेदनशील, धैर्यवान और सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति है।[3] उपन्यास की कथा इन दोनों के बीच के उस खामोश और अलौकिक रिश्ते के विकास की कहानी है, जहाँ राजन अपने शब्दों से कम और अपने आचरण से अधिक नन्दिनी के घावों पर मरहम लगाता है। उपन्यास की मूल कथावस्तु किसी बाहरी संघर्ष पर नहीं, बल्कि नन्दिनी के भीतर चल रहे अंतर्द्वंद्व और राजन के निश्छल, खामोश प्रेम के माध्यम से उस डर पर विजय प्राप्त करने की संघर्ष-कथा पर आधारित है। यह कथा बताती है कि क्रूरता से नष्ट हुए जीवन को केवल सच्ची सहानुभूति और असीम प्रेम के माध्यम से ही पुनर्जीवित किया जा सकता है।

3. मानवीय संवेदना के विविध आयाम

ज्ञानप्रकाश विवेक के इस उपन्यास में मानवीय संवेदना किसी एक निश्चित परिधि में कैद नहीं है, बल्कि यह मानव मन की कई जटिल परतों और आयामों को उद्घाटित करती है। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत विस्तार से समझा जा सकता है:

क. पीड़ा और आघात का मनोवैज्ञानिक चित्रण:

साहित्य में किसी त्रासदी का चित्रण करना आसान है, किंतु उस त्रासदी के बाद बचे रह गए शून्य और आघात को शब्दों में पिरोना

[1] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 12

[2] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008),, पृ. 24

[3] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 38

© 2026 बिन्दर कुमारी, डॉ मुकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अत्यंत कठिन है। विवेक जी ने नन्दिनी की उस 'पोस्ट-ट्रॉमेटिक' अवस्था का अत्यंत सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। 'डरी हुई लड़की' शीर्षक प्रतीकात्मक है; यह उस डर को दर्शाता है जो पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री के अवचेतन में गहरे तक बैठा दिया है। नन्दिनी हर आहट से चौंकती है, हर साये से खौफ खाती है और हर पुरुष उसे शोषक नज़र आता है। समाज की विडंबना यह है कि वह ऐसी घटनाओं के बाद पीड़िता को संबल देने के बजाय अपनी भेदक नज़रों, फुसफुसाहटों और लांछनों से उसे ही कठघरे में खड़ा कर देता है। लेखक ने समाज की इस खोखली और क्रूर संवेदनहीनता के बरक्स नन्दिनी के एकाकीपन, उसकी रातों की नींद उड़ जाने और उसके मौन रुदन को जिस तरह उकेरा है, वह पाठक को भीतर तक झकझोर देता है।

ख. सहानुभूति, खामोशी और अव्यक्त प्रेम :
उपन्यास में मानवीय संवेदना का सबसे उदात्त और खूबसूरत रूप राजन और नन्दिनी के रिश्ते में उभरता है। राजन नन्दिनी पर कोई 'दया' (Pity) नहीं करता, क्योंकि दया में एक प्रकार का अहंकार छिपा होता है। इसके बजाय, वह नन्दिनी के प्रति 'सहानुभूति' (Empathy) और गहरा सम्मान प्रदर्शित करता है। दोनों के मध्य विकसित होने वाला प्रेम आधुनिक युग के मुखर और प्रदर्शनकारी रोमांस से सर्वथा भिन्न है। यह एक अव्यक्त और खामोश प्रेम है। इसमें एक-दूसरे को स्वीकार करने की गहरी चाहत है, किंतु त्रासदी के बोझ तले उसे व्यक्त करने का साहस नहीं है। राजन की खामोशी नन्दिनी को यह अहसास कराती है कि वह सुरक्षित है। राजन का यह अव्यक्त प्रेम, जो देह की सीमाओं से बहुत दूर आत्मा के स्तर पर जुड़ता है, नन्दिनी के लिए एक थेरेपी (उपचार) का काम करता है।[4] इस प्रेम का मूल तत्व कामुकता नहीं, बल्कि विशुद्ध 'करुणा' है।

ग. जीवन जीने की जिजीविषा :
संवेदना को प्रायः दुख, रुदन या हार मान लेने का पर्याय मान लिया जाता है, किंतु ज्ञानप्रकाश विवेक इसे एक नई परिभाषा देते हैं। वे मानवीयता की परतों को खोलते हुए दर्शाते हैं कि मनुष्य के भीतर हार न मानने की एक आदिम प्रवृत्ति होती है। इतनी बड़ी अमानवीय त्रासदी से गुज़रने और खुद को समाप्त कर लेने के अनगिनत विचारों के बावजूद, नन्दिनी के अवचेतन में जीवन जीने की एक अदम्य 'जिजीविषा' बची हुई है। वह इस घुटन से बाहर आना चाहती है, साँस लेना चाहती है। राजन का निश्छल साथ, उसका अटूट विश्वास और सकारात्मक ऊर्जा नन्दिनी के भीतर छिपी उस जिजीविषा को जगाने का काम करते हैं। यह उपन्यास इस बात का प्रमाण है कि मानवीय संवेदना अगर सच्ची हो, तो वह मृत्यु-भय पर भी विजय प्राप्त कर सकती है।

घ. पुरुष की सकारात्मक और सहयोगी भूमिका
हिंदी साहित्य में, विशेषकर स्त्री-विमर्श की बहसों में, प्रायः पुरुष को शोषक, आक्रामक और पितृसत्ता के रक्षक के रूप में ही चित्रित किया जाता है। किंतु 'डरी हुई लड़की' इस स्थापित रूढ़ि को तोड़कर एक नई ज़मीन तैयार करता है। राजन का चरित्र उस रूढ़िवादी पुरुष-छवि का विखंडन करता है, जो स्त्री को केवल भोग्या या 'देह' के रूप में देखता है।[5] राजन स्त्री की देह के पार जाकर उसकी आत्मा के सौंदर्य, उसके दर्द और उसके वजूद का सम्मान करता है। यह मानवीय संवेदना का एक उत्कृष्ट और विरल उदाहरण है, जहाँ एक पुरुष, एक खंडित स्त्री के दर्द को अपना दर्द समझता है, उसे समाज की नज़रों से बचाता है और उसे पुनः सिर उठाकर जीने का संबल प्रदान करता है। राजन का चरित्र यह स्थापित करता है कि स्त्री-मुक्ति और स्त्री-विमर्श की सफलता पुरुषों के सकारात्मक सहयोग के बिना अधूरी है।

4. शिल्प और भाषा
ज्ञानप्रकाश विवेक के साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति उनकी भाषा की सादगी और उसमें छिपा गहरा संवेदनात्मक ताप है। 'डरी हुई लड़की' का शिल्प और इसकी भाषा केवल कथा कहने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं नन्दिनी के मनोविज्ञान और त्रासदी को अभिव्यक्त करने वाले सशक्त उपकरण बन गए हैं। इस उपन्यास के शिल्प और भाषिक विन्यास को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

मौन और खामोशी की भाषा :
एक गहरे मानसिक आघात (ट्रॉमा) से गुज़रने वाला व्यक्ति अक्सर शब्दहीन हो जाता है। लेखक ने नन्दिनी की इस मानसिक स्थिति को पकड़ने के लिए 'चीख-पुकार' या लाउड (संवादों का सहारा नहीं लिया है। उपन्यास में संवाद कम हैं और मौन अधिक है। राजन और नन्दिनी के बीच का संवाद भी अधिकतर आँखों, इशारों और खामोशियों के जरिए होता है। यह खामोशी ही उनकी सबसे मुखर भाषा है।[6] लेखक ने यह सिद्ध किया है कि जहाँ पीड़ा अत्यंत गहरी होती है, वहाँ शब्द बौने हो जाते हैं और मौन ही संवेदना का सच्चा संवाहक बनता है।

मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद और अंतर्द्वंद्व का शिल्प :
उपन्यास का शिल्प वर्णनात्मक होने के बजाय अत्यधिक विश्लेषणात्मक और मनोवैज्ञानिक है। घटना (बलात्कार) उपन्यास के केंद्र में है, लेकिन लेखक का पूरा ध्यान उस घटना के घटित होने के तरीके पर नहीं, बल्कि उसके बाद नन्दिनी के मन में उठने वाले तूफानों, उसके डर, उसके अकेलेपन और उसके अंतर्द्वंद्व को उकेरने पर है। यह चेतना-प्रवाह जैसी तकनीक के करीब पहुँचता है, जहाँ पाठक नन्दिनी के टूटते और फिर से जुड़ते मन की हर धड़कन को महसूस कर सकता है[7]।

बिंब-विधान और प्रतीकात्मकता :

[4] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 45

[5] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 54

[6] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 102

[7] ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 72

© 2026 बिन्दर कुमारी, डॉ मुकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ज्ञानप्रकाश विवेक ने अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए अत्यंत सटीक बिंबों और प्रतीकों का प्रयोग किया है। उपन्यास में अँधेरा, बंद कमरे, परछाइयाँ और अचानक होने वाली आहटें नन्दिनी के भीतर बैठे डर और असुरक्षा के प्रतीक हैं।[8] वहीं, राजन की उपस्थिति, उसकी संयत आवाज़ और उसका धैर्य—उजाले, खुली हवा और जीवन के प्रवाह के प्रतीक बन कर उभरते हैं।

संयत, काव्यात्मक और मर्मस्पर्शी गद्य :

लेखक की भाषा में एक सूफियाना ठहराव है। यह एक ऐसा गद्य है जिसमें कविता जैसी संवेदनशीलता और लय है, लेकिन वह यथार्थ की ज़मीन से एक पल के लिए भी नहीं उखड़ता।[9] लेखक ने त्रासदी का चित्रण करते हुए भी भाषा की गरिमा को बनाए रखा है; उसमें कहीं भी वीभत्सता या सनसनीखेज (Sensational) तत्व नहीं आने दिए हैं। यही संयत भाषा पाठक के भीतर करुणा का गहरा सागर निर्मित करती है।

5. निष्कर्ष

ज्ञानप्रकाश विवेक का उपन्यास 'डरी हुई लड़की' हिंदी कथा-साहित्य में मानवीय संवेदना, स्त्री-विमर्श और मनोवैज्ञानिक यथार्थ का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक दस्तावेज है।[10] यह उपन्यास इस बात की गहरी पड़ताल करता है कि जब समाज अपनी आदिम क्रूरता पर उतर आता है, तो वह केवल एक देह को नहीं, बल्कि एक समूची मनुष्यता और आत्मा को लहूलुहान कर देता है।

तथापि, इस रचना की सबसे बड़ी सफलता यह है कि यह निराशा, अवसाद और मृत्यु-बोध पर समाप्त नहीं होती। यह त्रासदी के मलबे से जीवन के अंकुर फूटने की कथा है। नन्दिनी का धीरे-धीरे अपने डर से बाहर आना और जीवन जीने की जिजीविषा को पुनः प्राप्त करना, मानव मन की अदम्य शक्ति का प्रतीक है।

इसके साथ ही, यह उपन्यास पारंपरिक स्त्री-विमर्श को एक नई और सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। राजन के चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री की मुक्ति और उसकी मानसिक पुनर्स्थापना में एक संवेदनशील पुरुष की भूमिका कितनी निर्णायक हो सकती है। राजन का खामोश प्रेम, उसकी अटूट सहानुभूति और धैर्य इस बात का प्रमाण हैं कि दुनिया में चाहे जितनी क्रूरता और अमानवीयता हो, उसे केवल सच्ची करुणा, निश्छल प्रेम और मानवीय संवेदना के बल पर ही परास्त किया जा सकता है।

अंततः, 'डरी हुई लड़की' मात्र एक पीड़ित स्त्री के खौफ की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस खौफ पर विजय प्राप्त करने वाले मानवीय प्रेम और संवेदना का एक कालजयी आख्यान है। ज्ञानप्रकाश विवेक ने इस कृति के माध्यम से यह संदेश दिया है कि समाज को रहने योग्य बनाए रखने के लिए, हमें अपने भीतर की उस कोमल संवेदना को बचाए रखना होगा, जो दूसरे के दुख में स्वतः ही आँसू बनकर छलक पड़ती है। यह उपन्यास पाठक को केवल रुलाता नहीं है, बल्कि उसे भीतर से एक बेहतर और अधिक संवेदनशील मनुष्य बनाकर छोड़ता है।

[8] वही, पृ. 88

[9] वही, पृ. 130.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ज्ञानप्रकाश विवेक. डरी हुई लड़की. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2024. 182 p.
2. ज्ञानप्रकाश विवेक, डरी हुई लड़की (नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008), पृ. 12
3. राजेन्द्र यादव. आदमी की निगाह में औरत. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2019. 259 p.
4. रोहिणी अग्रवाल. स्त्री-लेखन: स्वप्न और संकल्प. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2004. संस्करणानुसार.
5. रोहिणी अग्रवाल. हिंदी उपन्यास का स्त्री-पाठ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; संस्करणानुसार. संस्करणानुसार.
6. निर्मला जैन. कथा-समय में तीन हमसफ़र. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2012. संस्करणानुसार.
7. मधुरेश. हिंदी उपन्यास का विकास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन; 2014. संस्करणानुसार.
8. प्रभा खेतान. उपनिवेश में स्त्री: मुक्ति-कामना की दस वार्ताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2004. 231 p.
9. रामदरश मिश्र. हिंदी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; संस्करणानुसार. संस्करणानुसार.
10. मैनेजर पांडेय. साहित्य और सामाजिक संदर्भ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1998. संस्करणानुसार.
11. गोपाल राय. हिंदी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2016. 498 p.
12. सिमोन द बोउवार. स्त्री: उपेक्षिता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; संस्करणानुसार. संस्करणानुसार.

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the corresponding Author	
	Binder Kumari is a Research Scholar in the Department of Hindi at Vijay Singh Pathik Government (P.G.) College, Kairana, Shamli, Uttar Pradesh, India. Her academic work focuses on Hindi language and literature, with an interest in literary studies, contemporary issues, and research in the field of Hindi.

© 2026 बिन्दर कुमारी, डॉ मुकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/